इंडियन स्कूल सलालाह

हिंदी विभाग

आ ज म क म

बाल पत्रिका - 2022-23

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारा गर्व

हिंदी विभाग की ओर से.....

बालबत्रिका का चौथा संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें बड़ी खुशी हो रही है। यह काम बच्चों की प्रतिभा को निखारने और सँवारने का एक छोटा-सा प्रयास है। इस अवसर पर हमारे प्रेरणास्रोत, विद्यालय प्रबंधक समिति के अध्यक्ष डॉ. सैयद अहसान जमील जी, प्रबंधक समिति के अन्य समस्य, हमारे मार्गदर्शक प्रधानाचार्य श्री दीपक पाटण्कर जी, सह उप-प्रधानार्य श्री विपिन जी, सह उप-प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता जी तथा हिंदी विभाग के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हैं। आशा है कि हमारे नन्हे-मुन्ने छात्र भविष्य में बड़े कवि, कवयित्री एवं रचयिता बनकर माँ हिंदी की सेवा करेंगे।

एन. बालसुब्रमणियन

हिंदी विभागाध्यक्ष

इंडियन स्कूल सलालाह

संदेश

बालपत्रिका हमारे विद्यलय के छात्रों की उभरती प्रतिभाओं तक पहुँचने का मंच है जिनके कंधों पर हमारे देश का भविष्य निर्भर करता है। इसमें कोई शक नहीं कि यह बाल-पत्रिका छात्रों की बहुमुखी प्रतीभा को निखारने तथा सँवारने का सर्वोत्तम साधन है। मैं इस उन प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं का अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने अपने विचारों को सुंदर कविताएँ, कहानियाँ, लघु लेख के माध्यम से प्रकट किया है। मुझे पूरी उम्मीद है कि ये छात्र भविष्य में अपने विद्यालय तथा देश का नाम रोशन करेंगे।

मैं हमारे विद्यालय के प्राचार्य, विभागाध्यक्ष एवं हिंदी विभाग के सभी शिक्षकगणों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ जो अपने निस्वार्थ प्रयासों से छात्रों के प्रेरणास्रोत बनकर उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

डॉक्टर. सैयद अहसन जमील

अध्यक्ष

विद्यालय प्रबंधक समिति

इंडियन स्कूल सलालाह

उपकुलपति, दोफ़ार विश्वविद्यालय, सलालाह

हौसलों के आगे कोई पर्दा नहीं होता,
कड़े परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता।

आज के छात्र कल का भविष्य हैं। इस उक्ति का अर्थ यही है कि आगे चलकर यही छात्र हमारे देश का भविष्य निर्धारित करेंगे।

मुझे इस उत्कृष्ट बाल पत्रिका के बारे में लिखते हुए खुशी हो रही है। डिजिटल के इस दौर में यह बाल पत्रिका एक अनूठी पेशकश है। प्रतिस्पर्धा, चुनौतियाँ और आधुनिक युग की चकाचौंध में नन्हे-मुन्ने बच्चे अनजाने में ही अपनी प्रतिभाओं से दूर होते जा रहे हैं। इस दौर में हमारे विद्यालय द्वारा प्रकाशित यह बाल पत्रिका छात्रों की सृजनात्मकता, रचनात्मकता और मौलिकता को जीवंत बनाए रखने की कोशिश है। पत्रिका का चौथा संस्करण हिंदी विभाग के अनवरत प्रयास का प्रतिफल है जो कि वास्तव में प्रशंसनीय है।

मैं सभी छात्रों को हृदय की गहराई से बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। मुझे पूरा भरोसा है कि भविष्य में यह बच्चे अपने अध्यापक, अभिभावक और विद्यालय के नाम को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचाएँगे।

दीपक पाटणकर

प्रधानाचार्य

इंडियन स्कूल सलालाह

मेरी बिल्ली

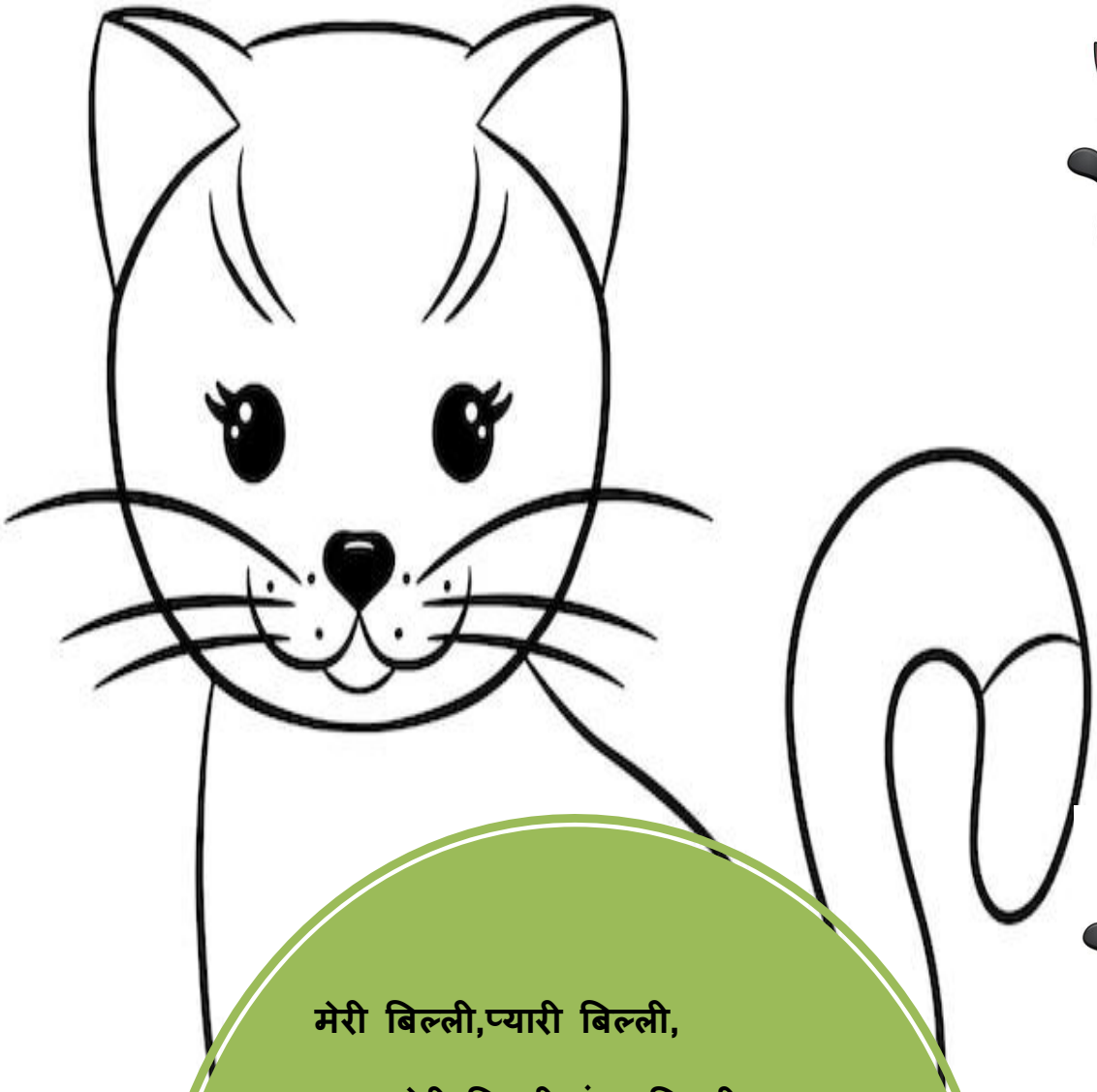

मेरी बिल्ली,प्यारी बिल्ली,

मेरी बिल्ली,सुंदर बिल्ली।

मेरी बिल्ली, छोटी बिल्ली,

मेरी बिल्ली, काली बिल्ली।

मेरी बिल्ली, चतुर बिल्ली,

मेरी बिल्ली, मोटी बिल्ली,

मेरी बिल्ली, अच्छी बिल्ली।

दिया सुनिल - तीसरी कक्षा 'एच'

छुट्टी में भी ना आराम

मुझे मिला है ढेरों काम
होमवर्क है जिसका नाम
कैसे घर में हाथ बटाऊँ
करते हो जाएगी शाम!

माँ छोड़ो तुम गुझिया-पापड़
टीचर से ना खाऊ झापड़
पूजा,क्रिसमस,होली,गर्मी
छुट्टी में भी ना आराम!

पहले मेरी मदद करो माँ
काम जरा एक अदद करो माँ
मेरे संग माँ मेहनत कर लो
मल दूँगी फिर सिर पर बाम!

तस्मिया खान
पाँचवीं कक्षा - जी

फूल

मैं बनना चाहता हूँ फूलों जैसा,

जो हमेशा मुसकाते रहते हैं।

आँधी तूफान को भी सहते हैं,

फिर भी सबको सुगंध देते रहते हैं।

टूटकर कभी हार तो

कभी जीतने वाले के गले की शोभा बनते हैं,

इसलिए बस मैं भी बनना चाहता हूँ

फूलों जैसा।

ज़हरा शारिक

तीसरी कक्षा - जी

चुटकले

फातिमा :-रोशनी क्या तुमको अंग्रेजी आती है?

रोशनी :-हाँ, आती है।

फातिमा :-अच्छा तो बोलो

रोशनी :-अंग्रेज़ी,अंग्रेजी,अंग्रेजी।

टीचर :-भारत में विदेश जाने वाली पहली महिला कौन थी?

पीटर :-सीता श्रीलंका गई थी।

सारा :-किस जेम को हम खा नहीं सकते?

हुसैन :-ट्राफिक जेम!

रूबी :-किस गेट को हम खोल नहीं सकते?

अनन्या :- कोलगेट!

सोनू :-किस चीज़ को हम खाने के लिए खरीदते हैं पर उसको नहीं खाते?

नरेश :-प्लेट!

समीरा

सातवीं कक्षा - ए

चींटी रानी

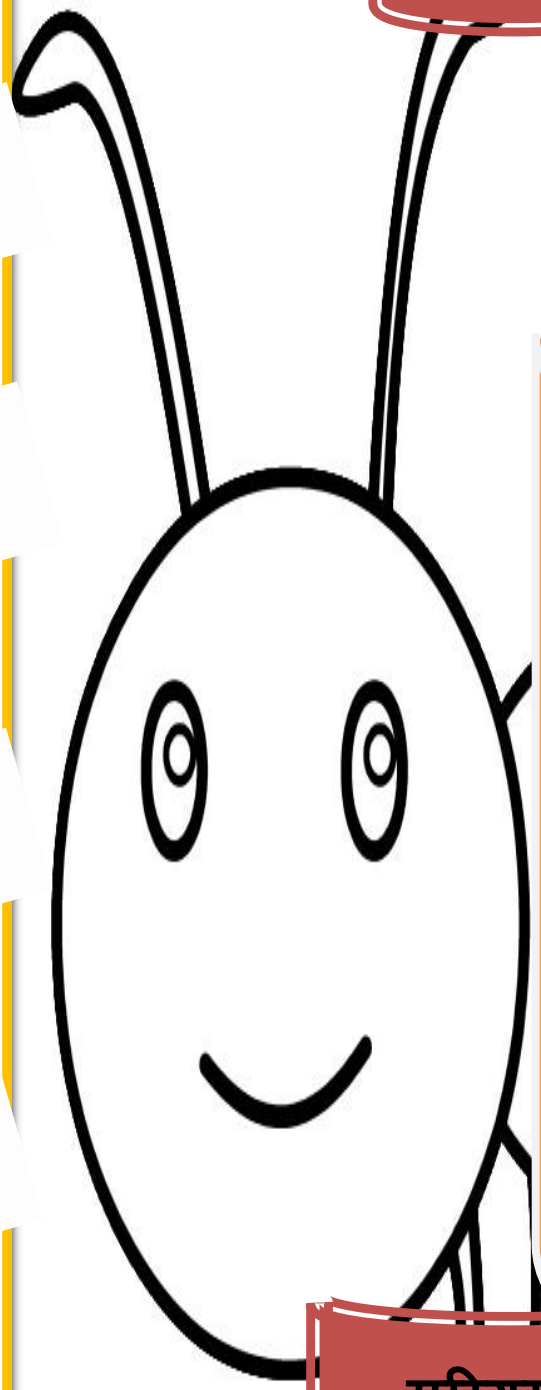

सयानी चींटी रानी,

मीठी चीज़ों की दिवानी,

जितनी छोटी उतने गुण,

सदा काम करने की धुन,

एक बार जो दिल में ठाना,

बस पूरा कर के दिखलाना

मरियम, तीसरी कक्षा - एच

पेड़

पेड़ हमारे साथी हैं,

छाया हमको देते हैं।

बाढ़ से हमें बचाते हैं,

मीठे फल भी देते हैं।

पेड़ कितने ज़रूरी हैं।

फिर भी बेचारे कटते हैं।

हम भी पेड़ लगाएँगे,

संसार को हरा-भरा बनाएँगे।

डी. गोकुलश्री

तीसरी कक्षा - डी

सुबह

गरम गरम लड्डू-सा सूरज
लिपटा बैठा लाली में
सुबह-सुबह रख आया कौन?
इसे आसमान की थाली में।
मूंदी आँखें खोलीं कलियों ने
चिड़ियों ने गाया गाना।
गुन-गुन करते भँवरों ने
खिलते फूलों को पहचाना।
तभी आ गई फुदक-फुदक कर
एक तितलियों की टोली।
मधुमक्खियों ने मधु रस लेकर
भर डाली अपनी झोली।
उठो-उठो हम लगे काम पर
तब आगे बढ़ पाएँगे।
वे क्या पाएँगे जीवन में
जो सोते रह जाएँगे।

मोहम्मद वक्कास
पाँचवीं कक्षा – एफ़

भारत में जन्मा

टाँग खिचाई होती इसमें,

टाँग खिचाई होती इसमें,

लेकिन दिल में रहता मेल!

भारत में जन्मा यह खेल!

एक अकेला धावा बोले,

एक साँस में क्या कुछ बोले!

जिनको-जिनको छूता जाए

वे सब होते जाते फेल!

चंगुल में यदि वह फँस जाए,

निर्णायक बाहर बैठाए!

और विपक्षी दल में मनती,

ढ़ेरों खुशियाँ रेलम-पेल!

मर-मरकर इसमें जी जाते,

कुश्ती के भी दाँव दिखाते!

समयबद्ध यह खेल निराला,

होती जिसमें ठेलम-ठेल!

आफ्रीन खान

नवीं कक्षा - डी

आज़ादी

मेरे प्यारे देशवासियों,

क्या यह है आज़ादी?

कुछ के लिए आकाश में ऊँची उड़ान,

समुद्र की अथाह गहराइयों में गोते लगाना,

यह है आज़ादी।

कुछ के लिए यह डर की समाप्ति और बिना ज़ुल्म के जीना,

यह है आज़ादी।

संयम होना और अपनी मन-मरज़ी करना,

यह है आज़ादी।

संसार में अपना अस्तित्व मनवाने की शक्ति,

यह है आज़ादी।

नहीं है इसकी कोई सच्चाई, यह है मन का बहलावा,

यह है आज़ादी।

कर्म, धर्म, विचार की आज़ादी

भिन्न-भिन्न है आज़ादी का अर्थ हर जानदार के लिए,

मेरे प्यारे देशवासियों, संयम से सोचो,

क्या है, किसके लिए आज़ादी?

अइज़ा एम इकबाल

आठवीं कक्षा - बी

जय जवान ! जय किसान

जय जवान! जय किसान!

यह सिर्फ बोलना है आसान!

इनमें से कुछ बनकर देखा,

यह है बहुत ही कठिन काम।

जवान अपने परिवार को छोड़कर,

लड़ते हैं सरहद पार।

कभी उनकी भावनाओं को समझो,

वह होते हैं कितने दिलदार।

किसान जो हमें पहुँचाते हैं आहार,

वे करते हैं काम लगातार।

हर मुश्किल का करते हैं सामना

और सहते हैं गरीबी के वार।

जय जवान ! जय किसान

कानन भाटिया

नवीं कक्षा - डी

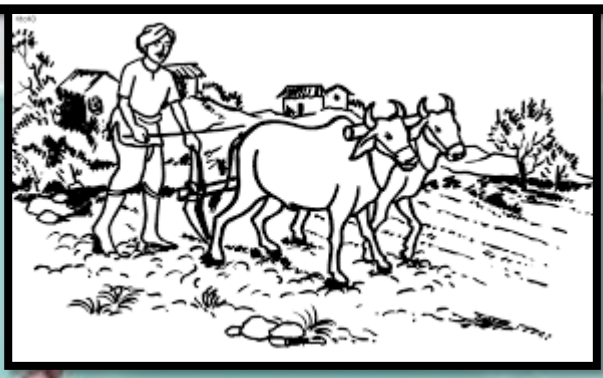

माता-पिता

ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमां कहते हैं।

इस जहाँ में जिसका अंत नहीं उसे माता-पिता कहते हैं।

बचपन अठखेलियाँ कर रहा है। माता-पिता रंगों से उसे रंगीन बना रहे हैं। वह माता-पिता का प्यार भरा आलिंगन, वह उँगली थामे पिता के साथ बचपन का पहला कदम, वह अपनेपन का गुलज़ार, वह मासूमियत का मंजर, पिता के मजबूत कंधों पर नन्हे हथेलियों का स्पर्श, वह खेलता बचपन, वह आँख मिचौली, वह नए सफर की हमजोली, उन खूबसूरत लम्हों को कैद करती माता-पिता की कैमरे की वह आँखें। माता-पिता जीवन के सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं जिनके आसपास ही खुशियाँ निवास करती हैं और जिनका स्थान हमारे जीवन में सबसे ऊपर होता है। वे हमारे पालनहार होते हैं और हमें काबिल इंसान बनाते हैं। उनकी दी हुई सीख ही हमें अच्छा इंसान बनाती है और कामयाबी के रास्ते में आ रही हर मुश्किल में वही हमें रास्ता दिखाते हैं और हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं।

जीनल एम. पटेल

आठवीं कक्षा - ए

आमरस का कलश

सुनील एक कबाड़ी था। वह घरों के कबाड़ इकट्ठा करके बेचा करता था। उसे मजबूरन यह काम करना पड़ता था। सुनील मन में सोचता था कि सभी लोग अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं, पता नहीं उसे कब अच्छे कपड़े मिलेंगे? मुझे तो बस माता-पिता कबाड़ खोजने के लिए भेज देते हैं। एक दिन उसने आमवाले को आम बेचते हुए देखा। जिनको देख कर उसके मुँह में पानी आ गया। वह आमवाले के पास गया। उसने कहा-"भैया एक आम दे दो बहुत भूख लगी है।" दुकानदार ने कहा कि तीस रुपए का एक आम है। सुनील ने कहा- "मेरे पास पैसे नहीं है।" दुकानदार ने कहा- 'मेरे पास भी आम नहीं है।"दुकानदार उसे धक्के मार कर भगा दिया। सुनिल आगे बढ़ा और देखा कि दो लड़के आम खा रहे हैं। सुनील ने उन दोनों लड़कों से आम माँगा। दोनों लड़कों ने उसे डाँट कर भगा दिया। सुनिल उदास होकर वहाँ से चला गया। रास्ते में चलते-चलते वह साधु

महाराज से मिला। साधु बेहोश होकर ज़मीन पर गिर रहे थे। वह उन्हें देखकर उनके पास दौड़ कर गया। सुनिल ने उनके मुँह पर पानी छिड़का। साधु महाराज को होश आ गया। उसने पूछा - "साधु महाराज क्या हुआ? सुनील को अपने पास देखकर साधु महाराज ने पूछा - "कौन हो तुम? मैं ज़मीन पर कैसे गिरा?" सुनिल ने कहा- 'साधु महाराज आप गरमी की वज़ह से बहोश हो गए थे।" साधु ने कहा- "तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यावाद! तुमने मेरी मदद की। सुनिल ने कहा- महाराज यह तो मेरा फ़र्ज़ था। साधु महाराज ने पूछा- "तुम इतने उदास क्यों लग रहे हो? सुनील ने अपने आम खाने की सारी बातें बताईं। साधु ने कहा- "सुनील तुमने मेरी मदद की है। मैं तुम्हें यह कमंडल देता हूँ, जिसमें आमरस निकलेगा। जितनी बार तुम इसे उलटोगे उतनी बार आमरस निकलेगा।" साधु ने सुनील को कमंडल दिया। सुनील उसे पाकर बहुत खुश हो गया। उसने मन भर कर

आमरस पिया और गरीबों को भी आमरस पिलाया।

रमन कुमार

सातवीं कक्षा - बी

भूत, वर्तमान और भविष्य: “उपन्यास सम्राट” की विरासत

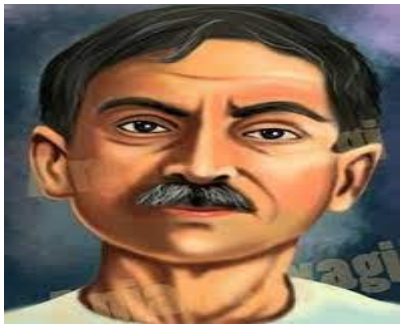

विद्वानों के बीच एक प्रचिलित मत है - साहित्य समाज का आईना है। मानना है कि साहित्य तभी कालातीत बन सकता है जब वह विचारोत्तेजक हो। यथार्थवादी दृष्टिकोण के अनुसार साहित्य समाज की सच्चाइयों को उजागर कर सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम होता है। हिंदी एवं उर्दू साहित्य के एक प्रचिलित लेखक इन्हीं मायनों पर खरे उतरते हैं; एक ऐसे व्यक्ति जिनके नाम की गूँज मृत्यु के 140 साल बाद भी स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती है। वह सामाजिक यथार्थवाद के उस्ताद हैं; वह हैं प्रेमचंद।

प्रेमचंद के जीवन की शुरुआत एक लेखक के रूप में नहीं, बल्कि एक अध्यापक के तौर पर हुई थी, जिसका कारण था उनके घर के आर्थिक संकट। परंतु प्रेमचंद और साहित्य का संबंध कई वर्षों पुराना था। उर्दू पत्रिका "ज़माना" में काम करते दौरान उनकी कलाकारिता देशभक्ति पर खूब आधारित थी। अपनी सबसे पहली स्वरचित लघु कथा में प्रेमचंद यह दोहराते हैं कि दुनिया का सबसे अनमोल रत्न लहू की वह बूँद है, जो देश को स्वतंत्रता दिलाने में सार्थक हो। हालांकि देशभक्ति उनके आगामी उपन्यासों में एक आवर्ती विषय बना रहा, परंतु प्रेमचंद के रुचि अब अन्य दिशाओं में घूमने लगी, और जन्म हुआ उस युग का, जिसने "उपन्यास सम्राट" को अमर बना दिया।

हिंदी साहित्य में यथार्थवाद के आरंभ का श्रेय अगर किसी को जाता है, तो वह हैं प्रेमचंद। उनकी पहली मुख्य कथा थी "सेवासदन", जिसके पश्चात उन्होंने कई उपन्यास एवं 300 से अधिक लघु कथाएँ रचीं। प्रेमचंद की कला का रस अल्प शब्दों में बयान करना कठिन है। वे संस्कृतकृत हिंदी के उपयोग का परहेज करते; उनकी भाषा आम बोलचाल की भाषा थी। परंतु इसी सरलता में वह व्यंग्य और हास्य की मोतियाँ पिरोते, जिसे उनके पूर्व शायद ही किसी लेखक ने इतनी सहजता से किया हो। मुहावरों एवं शब्दों के खेल में वे अति उत्कृष्ट थे। यह तो स्पष्ट है, कि प्रेमचंद एक कुशल कथाकार थे। परंतु यह उनकी लेखन शैली का केवल एक

पहलू है। उनकी कथाओं को सही मायने में अमर बनाने का श्रेय जाता है उन विषयों को, जिनके बारे में प्रेमचंद विस्तार से और निडर होकर लिखते थे।

उनकी कथाएँ ऐसे प्रसंगो पर आधारित थीं जिन्हें उनके समय तक साहित्य के दायरे से परे माना जाता था - शोषण और अधीनता, लालच और भ्रष्टाचार, गरीबी और एक अडिग जाति व्यवस्था। प्रेमचंद उन अल्पसख्यकों की आवाज़ थे, जिन्हे बरसों पुरानी रूढ़िवादी प्रथाओं ने अपने पिंजरे में कैद कर रखा था। प्रेमचंद साहित्य का उपयोग मानवीय सच्चाई पेश करने के लिए करते थे; वह अपने पाठकों को सामान्य चीज़ें देखने का एक नया दृष्टिकोण दिखाते। "गोदान" में वे प्रचलित वर्ग संघर्ष और अंग्रेज़ी काल के दौरान चल रहे गरीब गाँवों की दयनीय स्थितियों को सामने लाये। उनकी "कर्मभूमि" शांति और अहिंसा के गांधीवादी सिद्धांतों को दर्शाती है, और सामाजिक परिवर्तन, बलिदान, विचारधारा के टकराव और मनुष्य की प्रकृति का विश्लेषण करती है। "गोदान" - उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास - भारतीय किसानों के कठिन परिस्थितियों की कहानी है, जो आज की सदी में भी खरी उतरती दिखाई देती है। "निर्मला" के द्वारा प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में महिलाओं की दयनीय दुर्दशा का चित्रण किया। प्रेमचंद के अनुसार साहित्य सत्य और मानवता के बारे में था, और वह इस तथ्य को अपने उपन्यासों में अनगिनत बार दोहराते दिखाई देते हैं।

खेद है, कि उचित अनुवादों के अभाव के कारण प्रेमचंद की भारत के बाहर आज भी ज्यादा सराहना नहीं की जाती। इसके पश्चात भी, उनके उपन्यासों पर कई फिल्में और टेलीविजन श्रृंखलाएँ बनाई गईं। 31 जुलाई 2016 को गूगल ने प्रेमचंद के 136वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक गूगल डूडल तैयार कर पेश किया था। हिंदी साहित्य और समाज दोनों में उनका योगदान अतुलनीय है। यह कहना अनुचित न होगा कि उनकी विरासत उनके सरल परंतु कलात्मक लेखन की दुनिया में निहित है जो मानवता और मानवीय भावनाओं का हर राग अलापती है। प्रेमचंद लेखक से बढ़कर थे; वह एक दार्शनिक थे, जिनके जीवन और आजीविका के विचार न केवल दशकों तक, बल्कि आने वाली सदियों तक सार्थक एवं प्रासंगिक बने रहेंगे।

संचिता अनिल आगटे

ग्यारहवीं कक्षा - बी